IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"बीसवीं सदी के भारतीय राजनीतिक विचारकों की वंचित वर्गों के जीवन में भूमिका"

महेंद्र कुमार अहिरवार , शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग) शासकीय पीजी महाविद्यालय, निवाड़ी

डॉ. बीना गुप्त , असिस्टेंट प्रोफेसर , शोध निर्देशक (राजनीति विज्ञान विभाग) शासकीय पीजी महाविद्यालय, टीकमगढ़

शोध-सार : भारतीय राजनीतिक विचारकों द्वारा वंचित वर्गों के जीवन पर वास्तविकता के साथ लिखा गया है और उन पर प्रभाव डालने वाले समस्त आयामों का वर्णन भी किया गया है वंचित वर्गों का विकास देश के विकास के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। इन प्रमुख विचारको द्वारा समझाया गया कि सामाजिक भेदभाव, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक पिछड़ेपन का विपरीत प्रभाव वंचितों पर अधिक हुआ है। डॉ अंबेडकर, जयप्रकाश नारायण और राम मनोहर लोहिया जैसे विचारको द्वारा वंचितों की आवाज को उठाया गया। एवं उनके अधिकारों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण आंदोलन किए गए और पत्र पत्रिकाएं भी लिखी गई ।

मूल शब्द : वंचित वर्ग, राजनीतिक विचारक, सामाजिक भेदभाव , डॉ अंबेडकर ।

प्रस्तावना –

भारतीय राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था द्वारा भेदभाव की भावना के कारण कई शताब्दियों तक वंचित वर्गों को समाज की मुख्यधारा से प्रथक रखा गया है। समय-समय इनके उद्धार का प्रयास करने वाले व्यक्तित्व भी सामने आए परंतु स्थिति में आवश्यकतानुसार परिवर्तन नहीं आया। बीसवीं सदी के भारतीय राजनीतिक विचार को यथा डॉ बी आर अंबेडकर , महात्मा गांधी , जयप्रकाश नारायण , स्वामी विवेकानंद पेरियार ई वी रामास्वामी , राम मनोहर लोहिया , प. दीनदयाल उपाध्याय आदि के सफल प्रयासों ने वंचित वर्गों की स्थिति में सुधार लाया जो कि वर्तमान में भी दृष्टिगोचर है।

भारत में वंचित वर्गों के अंतर्गत अनुसूचित जाति , अनुसूचित जनजाति , महिलाएं , दिव्यांग एवं अन्य पिछड़े वर्ग सम्मिलित है जो कि समाज की मुख्य धारा से नहीं जुड़े सके और विकास में पीछे रह गए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 340 341 342 338 15(4) 16(4) आदि वंचित वर्गों के सशक्तिकरण से संबंधित है।

भारतीय राजनीतिक विचारकों ने वंचित वर्गों के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए जिनमें जाति व्यवस्था का कड़ा विरोध , अस्पृश्यता को अन्याय पूर्ण माना , नारी सशक्तिकरण के प्रयास , सामाजिक रूढ़ियों (बाल विवाह सती प्रथा) परिहार एवं इन्हें सामाजिक , राजनीतिक अधिकार दिलाने की वकालत की ।

जिनमें प्रमुख पुस्तकें लिखी जैसे जाति प्रथा का विनाश , शूद्र कौन थे? , मैं समाजवादी हूं , समाजवाद सर्वोदय और लोकतंत्र , संपूर्ण क्रांति , वाय वर वूमेन एंस्लेव्ड , इतिहास चक्र , एस्पेक्ट्स ऑफ सोशलिस्ट पॉलिसी , इटरनल ह्यूमनिज़म , सर्वोदय , हरिजन , यंग इंडिया , मूकनायक , बहिष्कृत भारत , समाजवाद क्यों , व्यावहारिक वेदांत , मानव धर्म आदि।

<u>उद्देश्य</u> -

1. वंचित वर्गों के जीवन पर प्रकाश डाला।
2. जाति व्यवस्था का समाज पर कुभाव बताना ।
3. महिला उत्थान के लिए किए गए कार्यों पर चर्चा।
4. सामाजिक समानता की आवश्यकता प्रदर्शित करना।
5. लोकतंत्र में सभी के विकास की भूमिका पर प्रकाश डालना।
6. सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका।
7. दलितों के उत्थान हेतु किए गए प्रयासों पर चर्चा ।
8. समाज की रूढ़ियों पर प्रकाश डालना।
9. राजनीतिक और सामाजिक अधिकार दिलाने में भूमिका।

साहित्य की समीक्षा -

जयप्रकाश नारायण की नीति दर्शन एवं समाज दर्शन" (2010) श्याम रंजन प्रसाद सिंह द्वारा लिखित एक महत्वपूर्ण शोध कृति है, जिसमें जयप्रकाश नारायण के समाजिक और राजनीतिक विचारों का विश्लेषण किया गया है। यह पुस्तक उनके सिद्धांतों, समाज सुधार, और समतामूलक दृष्टिकोण पर केंद्रित है।

"भारत के राजनीतिक और सामाजिक में डॉक्टर बी आर अंबेडकर का योगदान" (2015) चंद्रवती महामात्रा द्वारा लिखित एक शोध कृति है, जिसमें डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान का विश्लेषण किया गया है। पुस्तक में अंबेडकर ने वंचित वर्गों, खासकर दलितों और अन्य पिछड़े समूहों के अधिकारों के लिए किए गए संघर्ष को प्रमुखता से उठाया है। अंबेडकर ने भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद के खिलाफ आवाज उठाई और समानता, शिक्षा, और सामाजिक न्याय की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने भारतीय संविधान में इन वर्गों के अधिकारों की रक्षा हेतु विशेष प्रावधान किए, जिससे उनके उत्थान की राह प्रशस्त हुई।

"डॉ. राम मनोहर लोहिया का राजनीतिक दर्शन" (2014) सविता गुप्ता द्वारा लिखित एक शोध ग्रंथ है, जिसमें डॉ. लोहिया के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण किया गया है। पुस्तक में लोहिया के समाजवादी दृष्टिकोण, वंचित वर्गों के अधिकारों और उनकी सशक्तिकरण की दिशा में किए गए प्रयासों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

"स्वामी विवेकानंद का सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन: एक अध्ययन" (2017) सरोज कुमार दुबे द्वारा लिखित है। इस शोध में स्वामी विवेकानंद के सामाजिक और राजनीतिक विचारों का विश्लेषण किया गया है। विवेकानंद ने वंचित वर्गों के उत्थान, शिक्षा और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया ।

"वर्तमान राजनीतिक सामाजिक संदर्भ में महात्मा गांधी का सर्वोदय" (2015) सुभाष दर्शन द्वारा लिखित है। इस पुस्तक में गांधी जी के सर्वोदय दर्शन का विश्लेषण किया गया है, जिसमें उन्होंने वंचित वर्गों के उत्थान, समानता और सामाजिक न्याय की आवश्यकता पर बल दिया। गांधी के सिद्धांतों ने समाज में शांति और सामूहिक विकास की दिशा को प्रोत्साहित किया।

प. दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विचार: एकात्म मानववाद का अध्ययन" (2003) सुरेश कुमार द्वारा लिखित है। इस पुस्तक में दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद पर आधारित विचारों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें वंचित वर्गों के समग्र विकास, सामाजिक न्याय और आर्थिक सशक्तिकरण पर जोर दिया गया।

प्रमुख आंदोलनों , संस्थाओं , दलों का निर्माण किया जिनमें डॉक्टर बी आर अंबेडकर द्वारा बहिष्कृत हितकारिणी सभा , लेबर पार्टी बनाई , महात्मा गांधी द्वारा हरिजन सेवक संघ का गठन , पेरियार द्वारा आत्मसम्मान आंदोलन जस्टिस पार्टी का गठन राम मनोहर लोहिया द्वारा सप्त क्रांति का आह्वान। जयप्रकाश नारायण द्वारा संपूर्ण क्रांति का आंदोलन , महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिलाने , उनकी स्वतंत्रता , अस्मिता का समर्थन किया , वंचित वर्गों के लिए प्रसिद्ध रचनाएं पत्र पत्रिकाएं लिखी । वंचित वर्गों के जीवन के विविध आयाम

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक में प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारको द्वारा प्रकाश डालने का प्रयास किया ।

शोध प्रविधि –

भारतीय राजनीतिक विचारकों की वंचित वर्गों के जीवन में भूमिका पर शोध करने हेतु विवेचनात्मक एवं विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया तथा प्रमुख पुस्तक पत्रिकाओं का प्रयोग किया। प्राथमिक एवं द्वितीयक डाटा का प्रयोग भी किया गया। इन प्रविधियो की सहायता से शोध के उद्देश्यों को पूर्ण करने का प्रयास किया।

उपसंहार -

किसी भी देश के विकास के लिए उसके समस्त नागरिकों का विकास और भाईचारे के साथ मिल कर आगे बढ़ने की भावना अहम भूमिका निभाती है। भारत जैसे देश की अधिकांश जनसंख्या वंचित वर्गों में शामिल है जिसका विकास की मुख्यधारा में जुड़ना अति आवश्यक है। भारतीय राजनीतिक विचारकों में वंचित वर्गों के प्रति सहानुभूति संवेदनाएं थे एवं समाज द्वारा किए गए भेदभाव पूर्ण व्यवहार का कड़ा विरोध भी किया। जाति व्यवस्था ,अस्पृश्यता , सती प्रथा, हीन भावना आदि का जमकर विरोध किया। वंचित वर्गों को उनके सामाजिक , राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिए आंदोलन चलाएं एवं प्रमुख रचनाएं लिखें। वंचित वर्ग समाज का आधार बनाने वाले वर्ग हैं , इनमें परिवार का पालन पोषण करने वाली महिलाएं , मजदूर , सीमांत किसान , स्वच्छता बनाए रखने वाला वर्ग शामिल है। भारतीय राजनीतिक विचारक समाज के विकास , समानता , मानवता के समान सिद्धांतों से परिचित थे जिस कारण वंचित वर्गों को सम्मान दिलाने का सफल प्रयास किया । भारतीय राजनीतिक विचारों द्वारा वंचित वर्गों का समाज का मुख्य धारा से जोड़ने के लिए अथक प्रयास किया गये।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

- अंबेडकर, डॉ. बी. आर. *जाति प्रथा का विनाश.* बुद्धम पब्लिशर .2017.
- अंबेडकर, डॉ. बी. आर. *शूद्र कौन थे.* बुद्धम पब्लिशर. 2017.
- नारायण, जयप्रकाश. *संपूर्ण क्रांति.* सर्व सेवा संघ प्रकाशन वाराणसी .2015.
- *लोहिया,* राम मनोहर. *इतिहास चक्र.* लोक भारती प्रकाशन . 2017.
- *लोहिया,* राम मनोहर. *एस्पेक्ट्स ऑफ सोशलिस्ट पॉलिसी.* सोशलिस्ट पार्टी पब्लिकेशन .1952.
- रामस्वामी, पेरियार ई.वी. *बाय वर वूमेन एनशिलेण्ड.* पेरियार स्वाभिमान प्रचार संस्था.1942
- उपाध्याय, दीनदयाल. *इटरनल ह्यूनिजम.* हिंदी साहित्य सदन. 2014
- सिंह, श्याम रंजन प्रसाद. *जयप्रकाश नारायण की नीति दर्शन एवं समाज दर्शन..* शोधगंगा. 2010

- महामात्रा, चंद्रवती. *भारत के राजनीतिक और सामाजिक में डॉक्टर बी आर अंबेडकर का योगदान.*. शोधगंगा. 2015
- गुप्ता, सविता. *डॉ राम मनोहर लोहिया का राजनीतिक दर्शन.*. शोधगंगा. 2014
- दुबे, सरोज कुमार. *स्वामी विवेकानंद का सामाजिक एवं राजनीतिक दर्शन: एक अध्ययन.*. शोधगंगा. 2017
- सुभाष, दर्शन. *वर्तमान राजनीतिक सामाजिक संदर्भ में महात्मा गांधी का सर्वोदय.*. शोधगंगा. 2015
- कुमार, सुरेश. *पी दीनदयाल उपाध्याय के सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक विचार: एकात्म मानववाद का अध्ययन.*. शोधगंगा. 2003

सहायक ग्रंथ सूची -

यंग इंडिया , महात्मा गांधी

हरिजन , महात्मा गांधी

मूकनायक, डॉ बी आर अंबेडकर

बहिष्कृत भारत , डॉ बी आर अंबेडकर

समाजवाद क्यों? , जयप्रकाश नारायण